गुग्गल के सरंक्षण एवं संबर्धन को लेकर ऑपरेषन गुग्गल संगोष्ठी का आयोजन :–

सुजागृति समाज सेवी संस्था के सहयोग से मध्यप्रदेष राज्य लघुवनोपज संघ भोपाल द्वारा देवरी घड़ियाल केन्द्र मुरेना में दिनांक 10.07.2013 को 11 बजे से गुग्गल के सरंक्षण एवं संबर्धन को लेकर ऑपरेषन गुग्गंल संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में मध्यप्रदेष सहकार्यता संघ अध्यक्ष माननीय अरूण सिंह तोमर ने कहा गुग्गल हमारी चम्वल अंचल की पहचान पूरे देष में होनी चाहिए यह आयुर्वेद के लिए एक वरदान के रूप में पौधा है इससे तमाम बिमारियां दूर होती हैं इसलिए इसका संरक्षण, संबर्धन एवं समबाहनी उपयोग आवष्यक है। कार्यक्रम की अध्यक्षंता कर रहे जिला पंचायत सदस्य वन समिति अध्यक्ष श्री महेष रावत द्वारा जन समुदाय से अपील की गई के इसे कोड़ियों के भाव में न बेचते हुये लघुवनोपज समितियों को 900 रूपये के भाव से दें।

भोपाल से पधारे माननीय मध्यप्रदेष लघुवनोपज संघ एम. डी. श्री अनिल ऑवराय द्वारा कहा गया के मुरैना को गुग्गलमय बनाया जाये इसके लिए व्यवस्था में जितने पैसे कि जरूरत होगी में व्यवस्था करूंगा साथ ही उनके द्वारा सुजाग्रति संस्था द्वारा जैवविविधता प्रबंधन समिति पिपरई अध्यक्ष श्री रामनारायण पिप्पल को गूगल के संरक्षण, संबर्धन एवं उनके द्वारा पूछे गये प्रष्न के उत्तर देने से प्रषन्न होने पर पुरूस्कार से नबाजा गया उनके द्वारा जन मानस में गुग्गल के प्रति संबेदनषीलता भर दी गयी। भोपाल से ही पधारे अतिरिक्त पी.सी.सी.एफ.श्री कैनाल साहब द्वारा कहा गया कि गुग्गल ह्रदय रोग की बिमारी के लिए बहुत ही उपयोगी एवं आवष्यक है तथा गुग्गल पाकिस्तान से आयात किया जाता है जिससे हमारा बहुत सारा देषी धन विदेष में जाता है क्या यह न्यायोचित है, पहले हम गुग्गल के लिये पूर्ण सक्षम थे कहीं से आयात की आवष्यकता नहीं थी।

संगोष्ठी में पधारे डॉ. मोनी थॉमस एवं डॉ.श्री अतुल श्रीवास्तव, जे एन के भी भी जवलपुर द्वारा अनिष्चित मौसम एवं घटती संसाधनों से फसलोंत्पादन एवं कृषि अधारित आजिविका उपर्जन प्रभावित हो रही है। इस बदलते परिस्थिति में लघुवन उपज सतत ग्रामीण आजिविका के लिए महत्वपूर्ण विकल्प है। विनाषकारी विदोहन से गुग्गल के वृक्ष दुर्लभ होते जा रहे हैं। इसके दूरगामी दुष्परिणाम वातावरण, औषधीय उघोग एवं मानव स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित करेंगे उनके द्वारा विनाषहीन विदोहन की प्रक्रिया सभी लागों को समझाई तथा उनके द्वारा गुग्गल से गोंद निकालने का यंत्र चलाना भी सिखाया गया उन्होंने यह भी बताया कि सबसे श्रेष्ठ गुग्गल चम्बल में ही है इसके बीज एवं कटिंग व पौधे गुजरात या अन्य स्थानों से लाके यहॉ लगाना ठीक नहीं है क्योकि उनमें वह मानक तुष्ट गुण नहीं है डॉ0 अतुल श्रीवास्तव द्वारा गुग्गल गोंद का संबाहनीय उपयोग व उसके मौलिक गुणों पर सुजाग्रति समाज सेवी संस्था कार्यक्षेत्र में लगे गुग्गल पौधों पर एक साल से हुई रिसर्च के परिणाम अनुसार यह कहा गया कि डाबर कंपनी की लैब अनुसार यहॉ का गोंद सबसे कीमती है।

इसके अलावा खुले सत्र में बामसौली बी एम सी से पधारे श्री बहादुर सिंह द्वारा क्षेत्र में गुग्गल पेड व गोंद के विषय में जानकारी दी तथा संबर्धन एवं संरक्षण पर किये गये कार्य को लोगों में ष्षेयर किया। डॉवर कंम्पनी दिल्ली से पधारे डॉ किमोठी, दतिया से रिसर्चक विनोद मिश्र, सतना से बाबू लाल दाहिया, राजेद्र सिंह तोमर बकील साहब, सुजागृति समाज सेवी संस्था के अध्यक्ष जाकिर हुसैन एवं मुख्य वन संरक्षक डॉ रियाल साहब ग्वालियर वन वृत, मुख्य वन संरक्षक अनुसंधान एवं ग्वालियर चम्बल संभाग के आठों डी. एफ. ओ. व एक हजार हितग्राही किसानों ने संगोष्ठी में भागीदारी की। कार्यक्रम का आभार मुरैना डी.एफ. ओ. श्री बिनसेन्ट रहीम द्वारा किया गया।

अध्यक्ष

सुजाग्रति समाज सेवी

संस्था मुरैना म0प्र0